कुमाऊँ के प्रसिद्ध लोक गीत

ठा० आनसिंह हरिसिंह एन्ड सन्स

पुस्तक विक्रेता तथा प्रकाशक, लाला बाजार, अल्म

15-00

जनवरी १९८३]

कुमाऊँ के प्रसिद्ध लोक गीत

विभिन्न गीतकारों व पर्वतीय नारियों द्वारा
गाये गए गीत

संग्रहकर्त्ता :
स्व० चिन्तामणी पालीवाल,

प्रकाशक :
ठा. आनंदसिंह हरिसिंह एन्ड संस
पुस्तक विक्रेता लाला बाजार, अल्मोड़ा (उ. प्र.)

मुख्य विक्रय केन्द्र : :
कुमाऊँनी साहित्य सदन
चौरासी घन्टा, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

अष्टम संस्करण १९८२] २००० [मू 15-00

भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक में कुमाऊं के वह पुराने प्रसिद्ध लोकगीत दिए गए हैं जो अब तक कहीं नहीं छपे हैं लेकिन वह सबके सुने हुए और गाए हुए हैं। सबसे पहले पुस्तक के आरम्भ में रामायण की चौपाई दी गई है जो कुमाउंनी गीतों व पठों की तर्ज में गाये जावेंगे और उनके आगे पंठ लगाये गये हैं और आखिरी पंठ पर गीत चलाये गये हैं जैसे :—

मेरि माया धरि दिये जानकी, कलेजी का काख।
कलेजी का काख जानकी, राम ज्यू रघुवर॥

इसी प्रकार प्रेम सागर से भजन और दोहा देकर राधा कृष्ण के गीत गाए हैं। हर पंठ के आगे गीत चलाए गए हैं जैसे—

मोहना दर्शनों बिना राधिका उदास।
राधिका उदास मोहना, त्यरौ मोहना काँछ॥

इसके बाद शंकर पार्वती के ब्याह का प्ररकण है जैसे :—

सौमनाथौ कौतिक ऐगो बड़ौ झका झोर।
बड़ौ झकाझोर ए उमा शिवजी कौ वभूत॥

नारी स्तम्भ में नारी वर्ष के उपलक्ष में दिया गया है जिन गीतों में नारी के हृदय की वेदना है। उसके बाद अकेले गाए जाने वाले गीत हैं जो पर्वतीय नारी घास काटते समय पहाड़ों की तलहटियों पर या ऊंचे-ऊचे पेड़ों पर पत्तों की घास वाज का पउवा काटते हुए एकान्त में अकेली गाती हैं। इन गीतों की लय भी अलग होती हैं। ये बड़े सुरोले संजोग व वियोग श्रृंगार रस भरे गीत होते हैं और कुछ वह गीत हैं जो कुमाउंनी गीत सारंगी तब्ला में गाये जाते हैं इनको पिछले जमाने में (हुड़क्याड़ियाँ) गायकाये गाती थी इन गीतों के रिकार्ड भी भरे हुए हैं। इस प्रकार के गीत प्रस्तुत प्रसिद्ध गीतों की किताबों में दिए गए हैं। पाठक जन त्रुटियों की ओर ध्यान न देकर भावों को समझने की कोशिश करेंगे और शब्दों की भूल भी सुधार कर पढ़ने की कोशिश करेंगे।

संग्रहकर्ता की ओर से

॥ श्री गणैशाय नमः ॥

बाणी बन्देहम्

गीत रामायण से (सीता हरण)

अरन्ड काण्ड में जब मारीच कपट मृग बनकर आया तब राम बाण तक कर उसको मारने चले और रावण कपटी साधु बनकर सीता से भीख मागने और सीता को छलकर पकड़ के ले गया। उस समय का यह प्रकरण कुमाऊँनी गीतों में दिया जा रहा है। इसमें वियोग श्रृंगार रस का समावेश किया है और रामायण की चौपाई लिखकर अर्थ भावों को कुमाउंनी में स्पष्ट किया है।

चौपाई

सीता परम रुचिर मृग देखा, अंग २ सुमनोहर भेखा।
मृगबिलोकिकटि परिकरबांधा,करतल चाप रुचिमसर साँध
तबतकि रामकठिन शरमारा, धरिण परेऊफरिघोर पुकारा

दोहा

क्रोध वन्त तब रावण, लीन्हैसि रथ बैठाई
चला गगन पथआतुर, भय रथ हाँकि न जाय
जेहि बिधि कपट कुरंग संग, धाय चले श्री राम
सो छवि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम

चौपाई

अनुज समेत भये प्रभु तहवा, गोदावरी तट आश्रम जहवा
आश्रम दीख जानकी हीना, भये विकल जस प्राकृति दीना
हा गुण खानि जानकी सीता, रूप शील व्रत नेम पुनीता
पूछत चले लता अरु पाती, लछमिन समझायेइ बहु भाति

कुमाऊनी गीत

चिन्तामणो पालीवाल द्वारा

लौटि बै आया राम लखना, सीता नि मिली घर।
त्यकणी चाणा लैरैं जानकी राम ज्यू रघुबर॥

*

चौ०—होईहि सोई जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बड़ा वहि साखा॥

*

क्यब कांटौ चाखा, देवता नौ लाखा।
मेरी माया धरि दिये जानकी कलेजी का काखा॥

卐

कलेजी का काख जानकी राम ज्यू रघुबर।
लौटि वै आया राम लखना सीता नी मिली घर॥
त्यकणी वाणा लै रै जानकी राम ज्यू रघुवर।
कलेजी का काख जानकी राम ज्यू रघुवर॥

दोहा

कुछ करनी कुछ करतूत कुछ पुरुष जनम को भागा।
जम्बू बौले ये गत भई तू क्या बोले कागा॥

पंठ

बोतली कौ कागा जड़िया कौ सागा।
तू क्य लैकी डरी रै छै स्यु क्यछौ बागा॥
जस हल देखी जालौं जानकी त्यर भ्यर भागा।

卐

त्यर म्यर भाग जानकी राम ज्यू रघुवर ।
लौटि बै आया राम लखना सीता नि मिली घर ॥
त्य कणि चाणा लैरैं जानकी राम ज्यू रघुवर ।
त्यरौ म्यरौ भाग जानकी राम ज्यू रघुबर ।

卐

दो०—कौन तपस्वी तप करे, कौन उठ नित न्हाय ।
कौन पखेरू पंख बिन कौन देह बिन आय ॥

*

पंठ—आय गड़ बाय साटिमा कौ साय ।
पछिना चहाय क्ये जस नि पाय ॥
क्य मति बिगड़ी मेरी जो मैं त्यरा आय ।
रात दिना रोज त्यरी करौली लै खाय ॥

*

करौली लैं खाय जानकी राम ज्यू रघुवर ।
लौटि वै आया राम लखना सीता नि मिली घर ॥
त्यकणी चाणा लै रैं जानकी राम ज्यू रघुवर ।
करौली लै खाय जानकी राम ज्यू रघुवर ॥

०

दो०—ब्रह्मा तस्पवी तप करे विष्णु नित उठ न्हाय ।
मन है पखेरू बिना पंख का काल देह बिन आय ।

०

पंख—खरै की पाई, चमकनी थाई ।
रुपसा मुखड़ी तेरी क्यलै हैछ काई ॥

मैंजै कनु कौ हनली तू जै मेरी साई।
लौडियों दंगल मजि पछयाँणी निपाई॥
किरीम पौडर लगै सुरमा सलाई।
चप्पल चुड़िया त्यरा साड़ी बुटोंवाई॥
राम ज्यू की सीता ऐती कितु गेछैं आई।

: o :

कि तू गेछैं आई जानकी राम ज्यू रघुवर,
लौटि बै आया राम लखना सीता नी मिली घर।
त्यकणी चाण लैरैं जानकी राम ज्यु रघुबर॥
कि तू गेछैं आई जानकी राम ज्यु रघुवर॥

चौपाई

सुन सिय सत्य अशीष हमारी, पूजहि मन कामना तुम्हारो

o

पंठ—पाणि लगै धारी दन्यवैं को बारी।
सज्जन पुरुष भला पतिब्रता नारी।
आज ग्वावा तेरी बारी भोब मेरी बारी।
कसी कसी बीती रैंछा म्यर भागै पारी।

: o :

म्यर भागै पारि जानकी राम ज्यु रघुवर।
त्यकणि चाण लैरैं जानकी राम ज्यु रघुवर॥
लौटिबै आया राम लखन सीता नि मिली घर।
म्यर भाग पारि जानकी राम ज्यु रघुवर॥

: o :

प्रेम सागर से

जब श्री कृष्ण भगवान वृन्दाबन से द्वारिका चले गये थे वहाँ ११०००१०८ पटरानियों सहित रहने लगे, और द्वारिकाधीश कहलाने लगे, जब कि पहले यहा वृन्दावन की कुंज झाड़ियों में रहते थे गऊ चराते थे ग्वालियों के साथ रहते थे काली कमलिया ओड़ते थे तब राधा से कितना प्रेम था अब द्वारिका जाकर राधा को भुल गये।

पद्य—जिस राधा बिन न रहते घड़ी।
सो रही अब बर्षों पड़ी॥

तब रुकमणी राधिका से कहती हैं कि राधे तेरा मोहन कहा गया ये तो अब मेरा कृष्ण हैं और मेरे पास रहता है तेरा मोहन कहा है।

: ० :

गीत—म्यर किशन द्वारिका ऐगो त्यर मोहन कांछ।
त्यर मोहन कांछ राधिका त्यर मोहन काँछ॥
पद्य—गोकल ढूढ़ा वृन्दावन ढुढा ढुढा मथुरा काशी।
सगुण रुप मोरे मन भावा निंगुण कौन देश का वासी॥
उधो निंगुण कौन देश का वासो क्या है नाम क्या राशि
कौन वरन है कहां जनम है कौन है व अबिनाशी॥
कौन है व अविनाशी उधो कौन है व अविनाशी।

: ० :

रब्ट दीछै कच पका भात दीछै वासी।
रात दिना त्यर भरा भुगुती चौरासी॥
त्वीलै ढुढौ उत्तरा खण्ड मैंलै ढुढौ काशी।

कां त्यरा मौबुबा रनी, कां त्यरा सरासी ।
मोहना दर्शनों बिना राधिका उदासी ।।

: ० :

राधिका उदासी मोहना त्यर मोहना काँछ ।
म्यर किशन द्वारिका ऐगो त्यर मोहन कांछ ।।
त्यर मोहना कांछ राधिका त्यर मोहना कांछ ।

: ० :

दो०—एक भरोसा एक बल एक आस विश्वास ।
स्वाति सरिस रघुनाथ रस चातक तुलसीदास ।।

: ० :

काटि हालौ घास, खेली हैला तास ।
तु नी देली झन दिये मैंकैं तेरी आस ।।
मन में भरौस म्यरा दिल में विश्वास ।
मोहन मथुरा गोय राधिका उदास ।।

: ० :

राधिका उदास राधिका त्यर मोहना काँछ ।
म्यर किशना द्वारिका ऐगो त्यर मोहना कांछ ।
त्यर मोहना कांछ राधिका त्यर मोहना काँछ ।
राधिका उदास राधिका त्यर मोहना काँछ ।।

: ० :

दो०—तारा भये गगन मंडल जून भई भर पूरा ।
पृथ्वी में प्रकाश है जिसका कोटि करोड़ों दूरा ।।

व्या कणों नजिक भलौ भया लाणी दूरा ।
दुनियां जिहार हैरौ ह्य त्यरौ जहूरा ।।
मैं त्यरा नजिक आय तू रहछैं दूर ।
खणी च्यला खाई जानी त्यर क्य सहूरा ।।
क्य लै कि है गया मोहना राधिका है दूर ।

: ० :

राधिका है दूर मोहना त्यर मोहना कांछ ।
म्यर किशना द्वारिका ऐगो त्यरौ मोहना कांछ ।।
त्यर मोहना कांछ राधिका त्यर मोहना कांछ ।
राधिका है दूर मोहना त्यर मोहना कांछ ।।

: ० :

दो०-जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजे पाती ।
मेरे पिया मेरे दिल में बसत हैं मनहि जुड़ावौ छाती ।।

——

पठ—टिपि हाली पाती लूबै की दराती ।
पहाड़ों कौ भोटो ध्वड़ौ मैदानों कौ हाथी ।।
मैकणी लै रछ मोहना त्यरी कुरा काती ।
त्येजसौ बिरूठ नैक्वे मोहना म्मेजसो सुजाती ।।

——

म्ये जसी सुजाति मोहना त्यर मोंहना कांछ ।
म्यर किशना द्वारिका ऐगो त्यर मोहना काँछ ।।

——

स्यर मोहना काछ राधिका स्यरी मोहना काछ ।
स्ये जसी सुजाति मोहना स्यरी मोहना काछ ॥

卐

भजन

उधो बनि आये की बात उधो बनि आये की बात ।
एक दिन श्यामा हमने देखे मुंह धोये नहीं हाथ ॥
अब तो कृष्ण बने ब्रह्मचारी नित उठ रोज नहात ।
उधो बनि आये की बात ।उधो बनि आये की बात ॥
एक दिन श्यामा हमने देखे बन बन धेनु चरात ।
कांधे कमरिया हात लकुटिया करील के कुंजन जात ॥
अब तो कृष्ण बने हैं राजा चढ़े सिंहासन जात ।
उधो बनि आए की बात उधो बनि आए की बात ॥

卐

पोठ—तिमिली की पात, वतइया वात ।
नधी के ठिमाई जेई ने चुपकी हात ॥
पूरी की मामुल हैगो निपुजनों हात ।
तुमुकणी भूली गेछे बिरूठै की जात ॥

गीत—बिरूटै की जात मोहना स्यर मोहना काछ ।
स्यरी किशना द्वारिका ऐगो स्यर मोहना काछ ॥
स्यरी मोहना काछ राधिका स्यर मोहना काछ ।
बिरुटै की जात मोहना स्यर मोहना काछ ॥

दो०—पहले कंस खिलाय के पीछे बढ़ाये चीर ।
आये लाज गवाई के आखिर तो जात अहीर ॥

卐

पंठ-नसी पमी खीर, होली क अबीर, पांव पड़ी जंजीर,
गोरी गंगा नीर, कागजमा छापि दिन् त्यरी जसवीर,
मोहनी की बंसी बाजी जमुना का तीर, लैण गोरु लैण
भैंस दूध खैले खीर जब आली मुख तीरा तब आली जीर

卐

तब जाली जीर मोहना त्यरी मोहना कांछ ।
त्यरी मोहना कांछ राधिका त्यरी मोहना कांछ ॥
स्यर किशन द्वारिका ऐगो त्यरी मोहना कांछ ।
तबै जाली जीर मोहना त्यरी मोहना कांछ ॥

卐

मइया मैं नहीं माखन खायो मइया मैं नही माखन खायो
भोर भयो गइयन के पाछे मधु बन मोहे पठायो ॥

卐

पंठ—रहोट रिटायो, बहोड़ हिटायो ।
बिरुठा पराणी त्यरो पलटि निचायो ॥

卐

पलटि निचाय राधिका त्यरा मोहना कांछ ।
स्यर किशना द्वारिका ऐगो त्यर मोहना कांछ ॥
त्यर मोहना कांछ मोहना त्यर मोहना कांछ ।
पलटि निचाय मोहना त्यरो मोहना कांछ ॥

शिव पार्वतीं का ब्याह (रामचरित मानस से)

शंकर जी के ब्याह के समय का प्रकरण है। पार्वती जी की कठिन तपस्या के बाद शिवजी ने जब सप्त ऋषियों को पार्वती को परीक्षा लेने के लिए भेजा तब वह पूर्ण परीक्षा लेकर आए। उनसे पार्वती ने कह दिया कि :—

दो०-महादेव अवगुण सकल, विष्णु सकल गुणधाम।
जाकर मन रम जाहि सन ताहि ताहि सनकाम॥

चौपाई

कोटि जन्म लगि रगर हमारी बरौ शम्भु नतु रहौ कुमारी
मैं पापरौ कहै जगदम्बा तुम घर गमनहु भयउ बिलम्बा

जब सप्त ऋषि पार्वती की इस दृढ़ प्रतिज्ञा की परीक्षा लेकर आये और शंकर जी की बरात की तैयारी हुई :—

चौपाई

शिवहि शम्भुगण करहीश्रृंगार जा मुकुटअहिश्रौरसंभारा
कुन्डल कंकण पहरे ब्याला तन विभूति पटके हरी छाला

जब शंकर जी की बारात हिमाचल के भवन के निकट पहुंची तो बच्चे बारात को देखने चले। जब उन्होंने बारात में भूत प्रेत देखे तो घबरा गए और रोते बिखलते हुए माता पिता के पास आए। माता पिता ने पूछा तो कहने लगे।

कहियकहाकहि जात न बाता यमकर धार किधौ बाराता
बर वौराह बरद असवारा ब्याल कपाल विभूषण क्षारा

तब पार्वती की माता कहती है जिस विधाता ने तुझे ऐसा सुन्दर रूप दिया उसने ऐसा बावर वर कैसे बना दिया यहां पर इस गीत में वही भाव दिया है।

गीत-पार्बती त्यरौ सखियों साथ शिधजी संग भूत।
पार्बती जी को स्योनि सिंगार शिबजी कौ वभूत।

दो-जोगी जटिल अकाम मन नगन अंगमल भेख।
अस स्वामी इहि कहं मिलहि पड़ी हस्त अस रेख।

दो०-कह मुनीश हिमबन्त सुन जो विधि लिखा लिलार
देव दनुज नर नाग मुनि कोऊ न मेटन हार॥

पंठ—कोऊ न मेटनहार, दातुलै की धार।
गरवरी गार तली मली सार।
हरियाँ भरियाँ है रै ए रैछ बहार।
जैकी हली उथा जाली त्यरा ख्वरा छार।
तू लगैछैं झुठी सांची त्यर क्य पत्यार।
अध बटा छोड़ी गेछै नै वार नै पार।
जगू-जगू माया लैंछैं भिखारी की चार।
भव सिन्धु पड़ी रैछै को लगालौ पार।

गीत-को लगालौ पार ये उमा शिवजी त्यरा भूत।
पार्वती त्यर स्यौनि श्रृंगार शिवजी कौ बभूत॥
पार्वती साथ सखी सहेली, शिवजी साथ भत।
को लगालौ पार ये उमा शिवजी संग भूत॥

चौंपाई

जे-जे बर के दोष बखानै, तेसब सब शिव पहैंमें अनुमाने
जो तप करे कुमारी तुम्हारी भाबिहुं भेटि सकैं त्रिपारी

卐

पंठ—दन्यवै को बारी, पखाकी दन्यारी ।
मैं जसौं रसिया हनौ त्य जसा रस्यारी ।।
फुलकिया रब्टा हना आलू को तरकारी ।
हरी मर्च टिमाटर चटणी चचकांरी ।।

卐

गीत-चटणि चचकारी ए गौरी शिव जी कौ बभूत ।
पार्वती साथ सखी सहेली, शिवजी साथ भूत ।।
पार्वती त्यरौ स्योनि श्रृंगार शिबजी कौ बभूत ।
खटि मिठी न्यारी ऐ उमा शिव जी साथ भूत ।।

卐

दो-राम राम सब कोई कहै ठग ठाकुर अरु चोर ।
बिना प्रेम रीझैं नहीं दशरथ राज किशोर ।।

卐

पंठ—गालड़ी पिड़ानौ हैगो नथुली को डोर ।
कैं बण बिराजों रैंछैं हौसिया चकोर ।।
औरौ कणी औ रैं धन मैं छैं त्यरा सोर ।
रंगीलौ पराणी त्यरौ गोतों मजी जोर ।।
तू हनी पुन्यो की चना, मैं हनी चकोर ।
सौमनाथ कौतिक ऐगो बड़ो झकाझोर ।।

गीत—बड़ों झकाझोर ए उमा, शिव जी कौ वभूत ।
पार्वंती साथ सखो सहेली शिव जी संग भूत ।।
पार्वती त्यरौ स्योंनि श्रृंगार शिव जी कौ वभूत ।
बड़ो झकझोर ऐ गौरा शिव जी साथ भूत ।।

दो—मन मारे तन बस करै मारै सकल शरीरा ।
दशों इन्द्री बस में करे उसका नाम फकीरा ।।

पंठ—रावणै की लंका मजौ हनुमन्ता वीर ।
रावणै का गोली चला राम ज्यु का तीर ।।
तू जसी जोग्याणा हनी मैं जसौ फकीरा ।
मन में पिरीत तेरी नयनों में नीर ।।
भित घड़ी तू नो देखी हैं जानू अघीर ।
धाग हनौ टोड़ी दिनों त्यर मुख तीर ।।
खाणी की कुखाणौ केछै कसी जालौ जीर ।

कसी जालौ जीर ऐ उमा शिब जी कौ बभुत ।
पार्वती साथ सखी सहेलो शिवजी साथ वभुत ।।
पार्वती त्यरौ स्यौनी श्रृंगार शिवजौ कौ वभुत ।
कसो जालौ जीर ए गौरा शिबजी साथ भूत ।।

पुराने गीत

यहाँ कुछ कुमाऊंनी पुराने गीत दिये जा रहे हैं। पुराने जमाने में यह गीत तबला व सारंगी में गाये जाते थे जो कि बारात ब्याह आदि सामाजिक उत्सवों में गाई कायें (हुड़क्याड़िया) गाया करती थी। यह कुमाउंनी पुराने प्रसिद्ध गीत कहलाते हैं। जिनके रिकार्ड भी भरे हुए हैं। अब ग्रामोफोन की रिकाडों की प्रथा कुछ कम सी हो गई है जब से रेडियो ट्राजिस्टर चल गये है फिर भी कभी-कभी यह गीत रेडियो पर सुनने में आते हैं। यह कुमाउं के प्रसिद्ध पुराने गीत कुन्डली छन्द की तर्ज में है।

यह गीत हुड़क्याड़ियां तब गाया करती थी जब अनाज की नई फसलें आ जाती थी तब गह जमीदारों के घर पर जाकर अनाज की उगराई करती थी तब हुड़कियाँ हुड़का बजाकर हुड़के में तुमहम तुमहम करके गीत शुरू करता और हुड़क्याड़िया गीत गाती थी।

गीत डाकैं की गाड़िमा

तू किलै नि आई धना डाकै की गाड़िमा।

पंठ—भावरा तराई मजा हिट सरासरो॥
कैंकी मया कमैं निरैं हैगे बराबरी।
हैंगे बराबरी ए धना डाकै की गाड़िमा।
तू किलै निआई ए धना डाकै को गाड़िमा॥
डाकै की गाड़िमा धना उाकै को गाड़िमा।

माव जानी मोवटिया ड्यर कनी मछोड़ा।
जो खालौ में कणी खालौ तू मया न छोड़ा।

पुराने गीत

भाव जानी मोवटिया डेरा कनी मछोड़ा ।
जसी हली भुगुतुला तु मया न छोड़ा ।।

卐

तू मया न छोड़ धना डाकैकी गाड़िया ।
तू क्यलै नि ऐई धना डाकैकी गाड़िमा ।।
डाकै की गाड़िमा धना डाकैकी गाड़िमा ।

卐

देश वटी चड़ी ऐछा हरिया रंगै की ।
तू सुवा इकलै ऐछैं कां गेछा संगै की ।।
कां गेछा संगै की धना डाकैकी गाड़िमा ।।
तु कीलैं नि ऐंई धना डाकैकी गाड़िमा ।
डाकै की गाड़िमा धना डाकैकी गाड़िमा ।।

卐

दूद खाय पौरै बेरा दै खाय पराड़ ।
क्य त्यरौ कबूल छियौ ०य त्यरौ कराड़ ।।

卐

क्य त्यरौ कराड़ धना डाकैको गाड़िमा ।
तू क्यलै नि एंई धना डाकैकी गाड़िमा ।
डाकैकी गाड़िमा धना डाकैकी गाड़िमा ।

卐

आज गोय भोव आय भोव गोय भोव ।
डाईक जोभन गोय कबै नो बैठो स्याव ।।

क्वे नी बैठो स्योब धना डाकैकी गाड़िमा ।
तु क्यलै नी आई धना डाकैकी गाड़िमा ॥
डाकैकी गाड़िमा धना डाकैकी गाड़िमा ।

*

धानौकौ मझल खेत चाड़ी हला स्यरा ।
त्यकणी चढ़ाई मैलै लौडिया उमरा ॥

*

लौडिया उमर धना डाकैकी गाड़िमा ।
तू क्यलै नी एई धना डाकैकी गाड़िमा ॥
डाकै की गाड़िमा धना डाकैकी गाड़िमा ।

*

बात कैछै जुगुतिलै हिटछें ठसलै ।
दिन दिन दुबलौ हय मैं त्यरा झसलै ॥

*

मैं त्यरा झसै लै धना डाकैकी गाड़िमा ।
तू क्यलै नि आई धना डाकैकी गाड़िमा ।
डाकैकी गाड़िमा धना डाकैकी गाड़िमा ।

*

नाज भरौ नाई धना नाज भरौं नाई ।
धरमा दिखौयी हैछी चुवै कसी डाई ॥

*

चुवैं कसी डाई धना डाकैंकी गाड़िमा ।
तु किलै नि एई धना डाकैं की गाड़िमा ॥
डाकैकी गाड़िमा धना डाकैकी गाड़िमा ।

आजादी के गीत

सन् १९४७ में जब आजादी मिली और दिल्ली के पास लाल किले पर तिरंगा झण्डा लहराया गया तब कुमाऊँनी गीतकारों ने यह गीत गाए थे। यह भी पुराने गीतों के तर्ज में बाजे में तबले में गाए जाते है:—

हरियां रुमावा पिड़ई मीठै छा।
टोटामै करायी मामुली हीटैं छा॥

*

गाँधी महात्मा तेरी जैं जै कारी हो।
जवाहर लाला तेरी जै जैं कारो हो॥
टुपरी का लया तेरौ जै जै कारी हो।
गोबिन्द बल्लभपंता तेरी जै जै कारी हो॥

यौ भारता देशा तेरी जै जै कारी हो।
आजाद के गया, तेरी जै जै कारी हो॥
राजेन्द्र प्रसादा तेरी जै जै कारी हो।
लाल बहादुर शास्त्री तेरी जै-जै कारी हो॥
सुपि भरि धान तैरी जै जै कारी हो।

देश का लिजिया तैरी जै जै कारी हो॥
लगै गाया ज्याना तेरी जै जै कारो हो।
तुम हमरा नेता त्यरि जौ जौ कारी हो।

गांधी महात्मा तेरी जौ जौ कारी हो॥
स्वराज्या सेनानी तेरी जै जै कारो हो॥

हुड़क्याणियों के गीत

सारंगी तबला में गाए जाने वाले यह गीत व्याह बारात आदि उत्सवों में हुड़क्याणियाँ गाया करती थीं यह भी पुराने गीत हैं।

धना पुतई धना डन अये बाज काटुल।
डन अये वाज काटूल डन अए बाज काटूल॥
बुरुसी कौ फूला, घट काटों कूला।
तू म्यरा गऊना रये जसि मवा फूला॥
जसि मवा फूल धना डन आये वाज काटूल।
ओ धना पुतई धना डन आये वाज काटुल॥

रहटै की भेरा घट घालौ घेरा।
तू सुआ अपणी नीछैं कलेजी दिवेरा॥
कलेजी दिवेर धना डन आये वाज काटूल।
ओ धना पुतई धना डन आये वाज काटुल॥

सुरमा सलाई सुवा सुरमा सलाई।
नैं पुछी कुशल बात नैं मुख बुलाई॥
नैं मुख बुलाई धना डन आये वाज काटुल।
ओ धना पुतई धना डन आयै वाज काटुल॥

टोपी जूती छुबैं में धना टोपी जूति छुबै में।
क्य मतीं बिगड़ी मेरी मया पड़ी त्वै में॥
मया त्बै में धन डन आये बाज काटुल।
ओं धना पुतई धना डन आयो बाज काटुल॥

आजकल के नये गीत

यह दो लाइनों की तुकबन्दी वाले गीत मेलों व त्यौहारों में सामूहिक रूप से गुरुप बनाकर गाए जाते है इनके साथ यह जोड़ा जोड़ यानी आपस में प्रश्न उत्तर भी होते हैं। हुड़के की ताल में आठ दस व्यक्ति जब इन गीतों को मिलाकर गाते हैं और अपार भीड़ लग जाती है। जनता की अपार भीड़ उस गीतकार द्वारा किए गए प्रश्न के उत्तर में दूसरा गीतकार क्या कहता है इसको सुनने के लिए कान लगाये रहती है गीत के बोल इस प्रकार के होते हैं :

त्यर कानून देखि इन्द्रा दुनियाँ है रै खुशी।
पहाड़ों मजि लैरों इन्द्रा त्यर तिरंगा झंड।
च्यलैंलै पड़ौ आठ इस्कूल ब्वारीलै पड़ौ नौ॥

इस प्रकार के इन प्रसिद्ध गीतों के गीतकार हर मेलों में सिर्फ गीत गाने के लिए जाते हैं। इनमें अल्मोड़े जिले के प्रसिद्ध गीतकार श्री गुमानसिह रावत हैं जिनकी गीत नृत्य पार्टी दिल्ला में रहते हुए भी पहाड़ों के तमाम मेलों में जाते रहते हैं। अन्य गीतकार भी जैसे बचेसिंह कुआरबी देवीदत्त पटास वाले दिवानी राम भिक्यासैंण क्षेत्र वाले, गोपाल सिह चोकौट वाले, दामोधर केदार वाले, दयानन्द टिमटा, शेर सिह चक्षुहीन और नृत्याकार बचे सिह व मोहन सिह बटूला वाले।

भूतपूर्व गीतकार

१—श्री भवानी सिह वल्ला नया खुरेड़ी वाले २—बचेसिह मोहरनैल वाल ३—देवी दत्त सिवोली ४—अमर सिह बेल्टी वाले आदि।

त्यर कानून देखि इन्द्रा दुनिया है रै खुशी।
भ्रष्टाचारी जलि रहई जसी मनुवै घुसि॥
पहाड़ों मजी लैरौं इन्द्रा त्यरौ तिरंगा झंड।
सुख सुविधा दिदिये आब म्यार उत्तराखंड॥

बसन्त ऋतु ऐगे राधिका फुलि गे दूदि पेहुली ।
बुरुसी डाई लाल है रैछा बनि रै भलि बिहुली ।।
इन्द्रा त्यर चुनाव चिन्ह गोरू दगड़ा बाछि ।
द्वीसौ सीट गोरु ल्येगोछा बांकी ल्येगेछा बाछि ।।

किशना हैगो द्वारिका धीश मोहन गोरू ग्वाव ।
किशना हैगो श्याम सुन्दर मोहना हैगो काव ।।
राम ज्यू न्हैगी बनवास हणि दगड़ै न्हैगे सीता ।
पति का साथ बिपता भलि शास्त्रै की रीता ।।

वल खेतमा ग्योनू को बाल पलि पाटई राड़ ।
त्यकणी लैगौ धोपरी घाम मैकणी लागों जाड़ ।।
गाड़ी ले परू कुर मस्यूर झन टोड़िये ज्ञो ।
भावरा जानू धाम लागानी पहाड़ा पडौ हयों ।।

व्याखुली बे रै घर एजये धुरा जंगल बटि ।
त्ये बिना परु नक मान्यौ छा दिन छिपिय बटि ।।
पधानु ध्याब झोड़ा लै गई फुल सग्यानी बटि ।
म्यहणी परू दाब पकै दे झोई है जैछा खटि ।।

ओ बल्दा विनुवा बल्दा धर कनम जू ।
ओ व्यारी लछिमा नौली घर पकैं ल्या पू ।।
भूत का थान भुड़ पकाया खेल का थान पू ।
त्यपारि लेगै त्यर मैतुबा पूजिबैं अये तू ।।

च्यल लै पड़ौ आठ इस्कूल ब्बारी लैं पड़ौं नौ ।
भल कौ ब्बारी भल कौ त्वोलै मैंत बै ल्यछै भौ ।।
लिसुवा न्हैगी लिस गाड़ण दगणै न्हैगे हिर ।
त्य कणी हीरा भुख लै गेछा ककड़ौ खै जा चिर ।।

*

दिल्लो बौ एरै नौकर साई पैरि बै एरै सूट ।
त्य हणो ल्यारै बौल बौटम म्हैणी ल्यारै बूट ।।
मकणी हीरा डर लागिछा मोटर रोड पन ।
सिगरेट बीड़ी क धुवा उड़ानी एति इस्कूल नन ।।

*

गांज भाँगुल चरस पीनी नस में नीछा होस ।
इम्त्यानौ में फेल है जानो मास्टरों मजो दोष ।।
पंडित ज्ञानी कथा सुणानी सबुकैं दीनो ज्ञान ।
जजमानो कणी उपदेश दींनी अपणी नीछा ध्यान ।।

*

सौंकार दीनी कर्ज उधार चौगुणा लीनी ब्याज ।
गरीबों कणी दबाई दीनो ब्याजौ कौ लीनी ब्याज ।।

*

करजदार करज लीनी दिणै की तनी पट ।
सौंकार जब कर्ज मांगुछा मारणा जानी लट्ठ ।।
तस्करियों कणी पकणी इन्द्रा जेल में करो बन्द ।
मंत्रियों हणी कय कणौ हय अघिल बता छन्द ।।

उज्याड़ी खेतैं की बाड़ करनी सबुलैं यसैं कय।
रक्षक हैं गो भक्षक जब तब क्य कणौ हय ।।
चिन्तामणी गीत लेखनी इन्द्रा तेरी जैं।
भ्रष्टाचार खतम करो फिर लेखुला पैं ।।

*

नारी स्तम्भ

नारी वर्ष में यह नारी स्तम्भ उन नारियों की करुण पुकार है जो बाल्यकाल से ही नहीं बल्कि जन्म से ही उपेक्षित रही है । उनकी करुण पुकार इन गीतों में दी जा रही है। जो करुण रस परिपूर्ण हैं। इन गीतों में करुण रस का साक्षत स्वरूप भी दिखाई देता है । पिछले दिनों में नारी की कितनी अवहेलना रही वह इस गीत में देखिये लड़की अपने पिता के प्रति दीन दुःखी भावों से कहती हुई आवेश में आ जाती है ।

गीत—आ होली आहोली कनै नान भौ सिवाय ।
बाज्यू लौ नि सैंति सकौ मैं नानी ब्यवाय ।।

यह कुछ तो गरीबी का अभिशाप था और कुरीतियों का । आज हमारी प्रधानमंत्री ने इन सभी कमियों को दूर करने के लिए २० सूत्री कार्यक्रम चलाया है और नारी समाज के उत्थान के लिए नारी वर्ष मनाया गया है । नारी की करण पुकार दूसरे गीत में देखिये वह अपने हृदय की वेदना से आवेश में आकर अपने सासू के प्रति कहती है कि :–

गीत—भुंगरौ बुसिल हयौ मनु हैंगौ कावौ ।
सासू का लाड़िया मरौ में राते उठावौ ।।

इसी प्रकार नारी की वेदनाओं से भरे गीत इस स्तम्भ में आपको मिलेंगे नारी वर्ष के उपलक्ष में यह प्रकाशित हो रहे हैं ।

नारी स्तम्भ [करुण रस में]

आहोलो आहोली कनैं नान भौं स्यवाय ।
बौज्यू लै नि सौती सकौं मैं नानी ब्यवाय ।।

*

आय गड़ बाय रामा आय गड़ बाय ।
बौज्यू लैं रुपयां खया बुड़ाका ब्यबाय ।।
ढिकुली चूखमा हरी ढिकुली चुखमा ।
थाई भरी रुपयों की मैं दियौ दुखमा ।।

*

तरुडैं की खाड़ शिवा तरुड़ैं की खाड़ ।
बुड़ मरी गध्यरा गोय मेरी पड़ी डाड़ ।।
निमुबा सानणौ बौज्यू निमुबा सानणौ ।
कणमा बुलाणौ आंछा नक नी मानणौ ।।

*

धानु लागौ धन पुतई ग्यों खया सस्यौलैं ।
मुखड़ी सकिली हैंगी सौराँसा झस्यौलैं ।।
झुगरों बुसीलौ हयौ मनु हैगौ काव ।
सासुक लड़िया मरौ मैं रातैं उठाव ।।

*

पखैकी दन्यरी भजी ऐ गया बनरा ।
द्वी नाइे मनुवा धरौ पिसाणा जनरा ।।
सानण कौ हौव हय खेरक मुसोव ।
रातिया जनरा पिसों रात हैं उखोवा ।।

लुणौकी कढ़ाई मजो पितईया डाड़ू ।
जुऊ जुऊ मुख चैछैं छाति जै क्य फाड़ू ।
ले मेरी कलेजी काट ल्वे तरानै लिजा ।।
मलसलं आड़णी परा रेशमियां टालौ ।

: o :

मखमलौ आंगणी परा रेशमिया टालौ ।
जो खालो मैंकणो खालौ त्यकणी को खालौ ।
गाड़ वासौ गड़मोलिया डन बासो मोर ।।
सुवाका वियोग मजि रात दोना सोर ।।

: o :

इस्कूलिया नना एगी खेलनो आटुई ।
पांयों में पर्याद लौंगे हिरदा भाटुई ।।
किलभौड़ का बुजापना घुगतीकौ घोल ।
नौ लाखै नथूनी तेरी आँखी कौ क्य मोल ।।

: o :

लोहटुवा रोटा खया साग डोवणिया ।
पलटी पछीना चौछै को त्येर आड़िया ।।
तलखघा मनुवैं को रमकनी दैं छा ।
उकवकी खुटि तेरी डना डना जैछा ।।

: o :

वी. पी. द्वारा हर प्रकार की पुस्तकें मंगाने का पता :
कुमाऊंनी साहित्य सदन
३००५, चौरासी घन्टा बाजार सीताराम, दिल्ली.११०००६

नारियों के अकेलें में गायें जाने वाले गीत

पर्वतीय नारियां जब दूर जंगलों में घास काटने के लिए जाती है। जाते और आते समय तो इनकी एक कतार सी हो जाती है क्योंकि पहाड़ों के संकीर्ण रास्तों में एक के पीछे ही दूसरे चल सकते है। बराबर में होकर नहीं चला जा सकता। इसलिए लाइन बन जाती है। आगे जब वह अपने निश्चित स्थान पर जंगल में पहुंच जाती हैं तो वहां पर वह गोलाकार ग्रुप बनाकर विश्राम करती हैं वहां पर आपसी दु:ख-सुख की बातें करती है। जब बातचीत खत्म होकर पूर्ण विश्राम हो जाता है तब वह अलग-अलग घास काटने को जाती है। ऊँचे-ऊँचे बांज के पेड़ों पर चढ़कर या जहां वैसी घास होती है जो कि जमीन पर उगती है, वहां पहाड़ों की तलहटियों पर घास काटते हुए यह सुरीले गीत अपने ही चित्त की प्रसन्नता के लिए अकेली ही गाती हैं न कि किसी को सुनाने या समाज को रिझाने के लिए। बल्कि अगर कोई पुरुष दिखाई दे जाता हैं तो वह गीत गाना बन्द कर देती है। उनकी चित्त वृत्ति उस वक्त गोस्वामी तुलसीदास की जैसी हो जाती है।

●

नाना पुराण निगमागम संम्मतं यद्रामायणे निगदितं कचिदन्यतोषी।
स्वान्त:सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबन्धंमतिमजुल मातनोति ॥

गीत—खोई भिड़ा डाई परा निमुबा बनौली।
मेरी भूली मैं खै देली क्ये बुती हनौली ॥
नाखमा नथुली तेरी कानों मजी वाई।
रुपसा मुलड़ी तेरी क्यलै हैछ काई ॥

卐

हरीयां सारीम गोय घाकि मरी डाली।
मनमा फिकर लेली बे रै बुड़ो जाली ॥
हरीया आमैं को डाई हलै हला आमा।
कैलै तेरी मया टोड़ी हाय शिव रामा ॥

मलखना मटें पाई दें धरो मौ हणी ।
जोलौ तेरी मया टोडी रो बीकी मो हणी ॥
डना गोय घास हैणी घा काट खकस ।
मैं त्यरी काटनौ रैगों नानि माछि कसौ ॥

*

डाई बैठो कफु चढ़ो कफू कफू कोछा ।
म्यर हिया भरी आंछा आजि य कय कोछा ॥
दाड़िमें की डाई मजी बासी गे घुगुती ।
सुवा बीना ऐतो मैलो कतु जै भुगुती ॥

*

बशुवां बिनेंक पली पर देल लागा ।
जति जालो संग जोला स्यूड़ी कसो धाग ॥
दूरक मामुल हैगों कसी पुजो हाता ।
संग हैजो संग्याती को लामी है जो राता ॥

卐

पांणीक नौहवा सुवा पाणिक नौहवा ।
जै बणा हौसिया जाली उनणा चौहौवा ॥
ज्ञों धरा बी हणि सुवा ज्ञों धरा बी हणि ।
तू ऐ रैंछे घा काटण मैं ए रौ त्यहणि ॥

*

घगरै की ग्वाई सुवा घगरें की ग्वाई ।
पारै भिड़ा को हनली लाल धोती वाई ॥

घागरी या गौन सुवा घागरी या गौन ।
चतुर चौमास न्हैगौ लागी गोछ ह्योन ।।

ज्ञों जौनुकी बाल सुवा ज्ञों जौनुको बाल ।
हीरणा चीतल कसी भुलि गेछे चाल ।।

उतिसि को किलौ सुवा उतिनि को किलौ ।
अगास लगुली कसो चिनाणै नि मिलौ ।।

ज्ञौ बुता गिलम सुवा ज्ञों बुता गिलम ।
हरिया काकड़ो जसी तू म्यरा दिलम ।।

गीत

(रचियता — ज्ञानेन्द्र सिंह बिष्ट, धारचूला जनपथ पिथौरागढ़)

अपने कुमाऊँ प्रखन्ड में विभिन्न बोलियाँ बोली जाती हैं जैसे :— पछाऊँ की बोली कुछ और है अल्मोड़िया बोली कुछ अलग है और बागेश्वर क्षेत्र की कुछ अलग है। इसी प्रकार पिथौरागढ़ की बोली भी अलग है। श्री ज्ञानेन्द्र सिंह विष्ट ने वियोग श्रृंगार रस का यह रोंचक गीत पिथौरागढ़ की बोली में लिखा है :—

तर्ज—नाणि नाणि घिङारू की डायी......।

छुमा कैलै टौड़यूं छै......।

हह्यू चूली का पारी बटी, ह्य पाणी बहार ।
केले पालौ कैलै तालौ, केकी भई बहार ।।

सुवा चड़ो पाणी पिन्छ, रूख की तराणी ।
मैं त्यौ हिय को साथी, तू मेरो पराणी ।।

नाणि नाणि घिड़ारू की डायी......।

छूमा कैलै टोड़यूं छै......।

कैश्या बेली जूठी रंगे, पालका सागै की ।
पाँख हुना उड़ी औनी, मैं बिना पाँखै की ।।

फर फर फर कन्छ, केलड़ी को पाता ।
बाटुई झन लाये सुवा, हाई जुन्याई राता ।।
नाणि नाणि घिगाँरू की डाई...।
छुसा कैलैं टोड़यूं छै.....।

बार बीसी मिरग का पाठा, म्यरा मैदान में ।
पांख लै दे उड़ी औलो, मैं तेरा रैथान में ।।
काली गंगा का छाल छाल, माछी रकत ।
मकणि समझनै रये, खाण सीण बचत ।।
नाणि नाणि घिगांरू की डाई.....।
छुमा कैलै टोड़यू छै.....।

त्यर गों का हाजरी फूल, माथै में पैरौली ।
त्यर गोदी में ख्वार राखी संग में भैरौली ।।
लुकड़ा धोई धोब्याणी लै, त्यरा गौं का रीठा ।
बाय बाय रंगीला चड़ा, त्यार बचन मीठा ।।
नाणि नाणि घिगांरू की डाई.....।
छुमा कैलै टोठ़यू छै.....।

बाट तली तिमिली को, क्या विफल पात ।
धैं लागछी कारा कुरी, नै पुजनू हात ।।
फाटया फूटी झगूली में, हाल ढाल्याणो काता ।
तेरा नौ लै जोगी हौलौ, तू लै हये साता ।।
नाणि नाणि घिगांरू की डाई.....।
छूमा कैलै टोड़यूं छै.....।

कुमाऊं के दो प्रसिद्ध कलाकार

हीरा सिंह राणा — गुमान सिंह रावत

यहां श्री गुमान सिंह जी रावत कुमाऊँनी गीतकार के गीत दिए गए है जो उन्होंने श्री चिन्तामणी पालीवाल जी के पौत्र चि० श्याम श्याम सुपुत्र श्री पुरुषोत्तम पालीवाल के जन्मोत्सव पर पन्त कालौनी मैगजीन रोड, मजनूँ टीला दिल्ली में गाए थे।

उस समारोह में पालीवाल जी के समस्त परिवार के और गांव के सभी बिरादर तथा रिश्तेदारों के अलावा दिल्ली के विशिष्ट व्यक्ति भी मौजूद थे जिनमें निगमायुक्त श्री बी. आर. टमटा व डा. नारायण दत्त पालीवाल जी तथा के. आर. शर्मा श्री जगत सिंह भन्डारी, श्री मोती राम पयने व श्याम सिंह रावत आदि अनेकानेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

उस समारोह में सुप्रसिद्ध कलाकार श्री हीरासिंह राणा तथा गुमान सिंह रावत ने अपनी मण्डली के साथ आकर अत्यन्त रसिक गीत गाए और टेप रिकार्ड भी बजाए और रिकार्ड भी भरे जो आगे दिए जा रहे हैं। इन गीतों के अलावा उन्होंने और बहुत से गीत गाये जैसे "हिट ए साई द्वाराहाट, मेंहणी ल्यायो बेलबाटम घाघरी पैरो तुम।"

हीरा सिंह राणा जी ने गाया "हे नारी जग महतारी त्यहणि नमन" और "लश्का कमर बांधा हिम्मत का साथा" यहां इन प्रसिद्ध गीतकारों के गीत दिए जा रहे हैं :—

गीत : रंगीला सू सू मुरली बाजीं गे

कलाकार : गुमानसिंह रावत

स्त्री—पारा मीड़ा कौछै भागी सू सू सू शुरुली बाजी गे
बिणुली बाजी गे.....।
पार बटी बर्यात ऐगे धू धू धू नाँगरौ बाजी गे।
रणसिंघ बाजी गे.....।
पंठ—तेरी गला मूंग की माला चमकनी जंजीरा।
मेरी तेरी भेंट होली देबी का मन्दिरा॥

देवी का मन्दिरा भागो धू धू धू नांगरौ बाजोगो।
रणसिंघा बाजो गो.....।

पारै भीड़ा कोछैं भागी सू सू सू मुरुली बाजी गे।
विणुली बाजी गे.....।

पुरुष—धारम देवीक थाना दूध लैं नवायो।
त्यरौ जूठौ मैं नि खाछी मयैा लै खवायौ॥

माया लै खवाय भागी धू धू धू नांगर बाजीगौ.....।
रणसिंघा बाजीगौ.....।

पारै भीठ़ा कोछै भागी सू सू सू मुरूली बाजी गे.....।
विणुली बाजी गे.....।

स्त्री—रंगीली पिछोड़ी मैंलै आंसू में भिजौंछा।
त्यरा बिना मैंलै छैला उमरा बितैछा॥

उमरा बितौछा भागी धु धु धु नांगरौ बाजीगो।
रणसिंघा बाजागो.....।

पारा भिड़ा कौछै भागी सू सू सू मुरुली बाजी गे...।
विणुली बाजी गे.....॥

पुरुष—मारि हाली बाकरे पाठि पस्यै हाली बसी।
पारा भोड़ा मैंलै देखी ब्यांणी तारा जसी।
ब्याणा तारा जसो भागी धु धु धु नांगरौ बाजीगो।
रणसिंघ बाजिगो.....।

स्व. कुमा० कवि चिन्तामणि पालीवाल द्वारा स्थापित :

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक

निम्न प्रकार से आपकी सेवा के लिए उपस्थित है :—

हिन्दी अंग्रेजी हर प्रकार के आधुनिक टाईप की छपाई होती है।

कुमाऊनी बोली में कविता झोड़े भगनौले एतिहासिक तथा धार्मिक पुस्तकों की छपाई का प्रमुख केन्द्र :

शादी कार्ड, विजिटिंग कार्ड, पोस्टर निमन्त्रण कार्ड, सेहरे, कलैण्डर, गृह-प्रवेश, आदि सभी प्रकार की आधुनिक तथा उच्चकोटि की छपाई का एकमात्र स्थान :

श्री रामलीला नाटक नवीनतम ढंग से

रामलीला समितियों के सेवार्थ प्राचीन व अर्वाचीन सात रामायणों के उपयुक्त प्रसंग व अंशों का संग्रह कर तथा समयानुसार राग रागनियों को उपयुक्त स्थान देते हुए भीमताली तर्ज पर नवीनतम ढंग से रामायण को नाटक के रूप में जनता ही नही वल्कि रामलीला समितियां भी इसका लाभ उठा सकेगी।

● हमारे यहां पहाड़ी गीतों की कैसिटें भी मिल सकती हैं ●

सभी कुमाऊनी भाषा के कलाकारों से नम्र निवेदन हैं कि नये गीत झोड़े भगनौले आदि छपवाने का रिकार्डिंग कैसट के लिए स्वयं मिलें या पत्र व्यवहार करें। गीतकारों तथा कलाकारों के योगदान से ही जनता को इस सेवा कर सकते हैं।

प्रकाशक

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

4000/23-1-83